International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

इतिहास लेखन में राव तुलारामः औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

परवीन

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

डॉ. यशपाल सिंह

शोध निर्देशक, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

शोध सारः

यह विस्तृत शोध–पत्र 1857 के विद्रोह के संदर्भ में राव तुलाराम के इतिहास लेखन का गहन एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी इतिहासकारों द्वारा एक ही ऐतिहासिक व्यक्तित्व को किस प्रकार भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया गया है। औपनिवेशिक लेखन में राव तुलाराम को एक क्षेत्रीय विद्रोही और अस्थिरता उत्पन्न करने वाले नेता के रूप में चित्रित किया गया, जबकि राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने उन्हें एक वीर, दूरदर्शी और राष्ट्रभक्त नेता के रूप में स्थापित किया। यह शोध इन दोनों दृष्टिकोणों के वैचारिक आधार, स्रोतों के उपयोग, और उनके राजनीतिक उद्देश्यों का विश्लेषण करते हुए यह तर्क प्रस्तुत करता है कि एक संतुलित इतिहास लेखन के लिए बहु–स्रोत और आलोचनात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है।

मुख्य शब्दः राव तुलाराम, 1857 का विद्रोह, इतिहास लेखन, औपनिवेशिक दृष्टिकोण, राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, हरियाणा, रेवाड़ी, सिपाही विद्रोह, किसान असंतोष।

प्रस्तावनाः

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक निर्णायक घटना थी, जिसने औपनिवेशिक शासन की संरचना को चुनौती दी और भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक साझा प्रतिरोध के मंच पर संगठित किया। इस विद्रोह का प्रभाव उत्तर भारत के विस्तृत क्षेत्रों में देखा गया, जिसमें वर्तमान हरियाणा का क्षेत्र भी शामिल था, जो उस समय पंजाब प्रांत का हिस्सा था। रेवाड़ी के शासक राव तुलाराम इस विद्रोह के प्रमुख नेताओं में से एक थे, जिन्होंने न केवल सैन्य स्तर पर ब्रिटिश सत्ता का विरोध किया, बल्कि कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का भी प्रयास किया।

हालाँकि, इतिहास लेखन में उनकी भूमिका को लेकर एकरूपता नहीं है। विभिन्न इतिहासकारों ने अपने वैचारिक दृष्टिकोणों के आधार पर उनके योगदान का अलग–अलग मूल्यांकन किया है। इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि इतिहास लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों का

तुलनात्मक अध्ययन किया जाए, जिससे राव तुलाराम की ऐतिहासिक छवि को अधिक स्पष्ट और संतुलित रूप में समझा जा सके[i]।

इतिहास लेखन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि:

इतिहास लेखन केवल घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि उन घटनाओं की व्याख्या और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है। प्रत्येक इतिहासकार अपने समय, समाज और वैचारिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होता है, जिसके कारण इतिहास की प्रस्तुति में विविधता देखने को मिलती है। 1857 के विद्रोह के संदर्भ में औपनिवेशिक, राष्ट्रवादी और आधुनिक दृष्टिकोणों के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। औपनिवेशिक इतिहासकारों ने इस विद्रोह को एक सीमित सैन्य विद्रोह के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली व्यापक अभिव्यक्ति माना। वहीं, आधुनिक इतिहासकारों, जैसे रणजीत गुहा और एरिक स्टोक्स ने इस विद्रोह को ग्रामीण समाज, किसानों और स्थानीय समुदायों के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया है[ii]।

औपनिवेशिक दृष्टिकोण:

औपनिवेशिक इतिहास लेखन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन की वैधता को स्थापित करना और विद्रोह को एक असंगठित तथा आकस्मिक घटना के रूप में प्रस्तुत करना था। जॉन विलियम के और जी–बी– मैलेसन जैसे इतिहासकारों ने 1857 को सैनिक विद्रोह के रूप में परिभाषित किया और इसे मुख्यतः सैनिक असंतोष का परिणाम बताया।

राव तुलाराम के संदर्भ में औपनिवेशिक लेखन उन्हें एक स्थानीय विद्रोही सरदार के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसने ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध अस्थिरता उत्पन्न की। उनके सैन्य प्रयासों और कूटनीतिक गतिविधियों को या तो नजरअंदाज किया गया या उन्हें नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया [iii]। इसके अतिरिक्त, पर्सीवल स्पीयर जैसे इतिहासकारों ने भी विद्रोह को सीमित महत्व देते हुए इसे व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वीकार नहीं किया[iv]। इस प्रकार, औपनिवेशिक इतिहास लेखन में राव तुलाराम की छवि सीमित, नकारात्मक और पक्षपातपूर्ण रूप में उभरती है।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण:

राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने औपनिवेशिक दृष्टिकोण का विरोध करते हुए 1857 के विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली व्यापक अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। बिपिन चंद्र, एस.एन. सेन, आर.सी. मजूमदार और तारा चंद जैसे विद्वानों ने राव तुलाराम को एक वीर, साहसी और राष्ट्रभक्त नेता के रूप में चित्रित किया है।

इन इतिहासकारों के अनुसार, राव तुलाराम ने न केवल हरियाणा में विद्रोह का नेतृत्व किया, बल्कि उन्होंने विदेशी शक्तियों; विशेष रूप से अफगानिस्तान और ईरान से समर्थन प्राप्त करने

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

का भी प्रयास किया, जो उनके दूरदर्शी नेतृत्व को दर्शाता है[v]। हालाँकि, राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में कभी–कभी अत्यधिक प्रशंसा भी देखने को मिलती है, जो ऐतिहासिक संतुलन को प्रभावित कर सकती है।

आधुनिक/समकालीन दृष्टिकोण:

आधुनिक इतिहासकारों ने औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दोनों दृष्टिकोणों की सीमाओं को पहचानते हुए एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास किया है। रणजीत गुहा के नेतृत्व में सबाल्टर्न अध्ययन समूह ने यह तर्क दिया कि 1857 का विद्रोह केवल अभिजात वर्ग का आंदोलन नहीं था, बल्कि इसमें किसानों, मजदूरों और स्थानीय समुदायों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

इसी प्रकार, एरिक स्टोक्स ने अपने अध्ययन में ग्रामीण समाज और कृषक असंतोष को विद्रोह का प्रमुख कारण बताया। इस दृष्टिकोण से राव तुलाराम को एक ऐसे नेता के रूप में देखा जाता है, जिसने स्थानीय समाज के विभिन्न वर्गों को संगठित कर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष किया[vi]।

तुलनात्मक विश्लेषण:

औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोणों की तुलना से यह स्पष्ट होता है कि दोनों ही अपने–अपने वैचारिक उद्देश्यों से प्रभावित हैं। औपनिवेशिक इतिहासकारों ने ब्रिटिश शासन की वैधता को बनाए रखने के लिए विद्रोह को सीमित और असंगठित बताया, जबकि राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करने के लिए इसे एक व्यापक स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रस्तुत किया।

राव तुलाराम की छवि भी इन दोनों दृष्टिकोणों में भिन्न रूपों में उभरती है जहाँ औपनिवेशिक लेखन उन्हें एक विद्रोही के रूप में प्रस्तुत करता है, वहीं राष्ट्रवादी लेखन उन्हें एक नायक के रूप में स्थापित करता है। आधुनिक इतिहास लेखन इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है[vii]।

निष्कर्ष:

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राव तुलाराम की ऐतिहासिक छवि इतिहास लेखन में विभिन्न दृष्टिकोणों के अनुसार परिवर्तित होती रही है। औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दोनों ही दृष्टिकोण अपने–अपने संदर्भों में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन एक संतुलित और वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन के लिए इन दोनों की सीमाओं को समझना आवश्यक है।

राव तुलाराम का योगदान न केवल हरियाणा के क्षेत्रीय इतिहास में, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके जीवन और कार्यों का गहन अध्ययन भारतीय इतिहास लेखन को और अधिक समृद्ध बना सकता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

संदर्भः

[i] बिपन चंद्र. (2010). 'आधुनिक भारत का इतिहास', ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ. 150

[ii] रणजीत गुहा (1983), एलीमेंटरी ऐस्पेक्ट्स ऑफ पीजेंट एमर्जेन्सी इन कॉलोनियल इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, पृ. 62 एरिक स्टोक्स (1986), द पीजेंट आर्म्डः द इंडियन रिवोल्ट ऑफ 1857, क्लेरेंडन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, पृ. 25

[iii] जॉन विलियम के (1864), हिस्ट्री ऑफ द सिपॉय वॉर इन इंडिया, लॉन्गमैन, लंदन, पृ. 320; जी.बी. मालेसन (1878), हिस्ट्री ऑफ द इंडियन म्यूटिनी, एलेन एंड कंपनी, लंदन, पृ. 225

[iv] पर्सिवल स्पीयर (1990), ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया (भाग 2), पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, पृ. 170

[v] बिपन चंद्र. (2010). 'आधुनिक भारत का इतिहास', ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ. 152

[vi] एरिक स्टोक्स (1986), द पीजेंट आर्म्डः द इंडियन रिवोल्ट ऑफ 1857, क्लेरेंडन प्रेस, ऑक्सफोर्ड, पृ. 40

[vii] आर.सी. मजूमदार. (1963), 'सिपाही विद्रोह और 1857', फर्मा के.एल.एम, कोलकाता, पृ. 35